बी० ए० भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
'छायावाद'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)

छायावाद :-

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग की वह काव्य-धारा है जो लगभग 1916 से 1936 (उच्छ्वास से युगांत) तक की प्रमुख युगवाणी रही जिसमें प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी आदि प्रमुख कवि हुए और स्वच्छन्दता जिसकी मूल प्रवृत्ति है।

'छायावाद' की प्रवृत्तियों का दर्शन 1916-17 ई. के आस-पास दिखलायी देने लगता है और 'छायावाद' नाम का प्रचलन 1920 ई० के आस-पास हो चुका था। मुकुटधर पाण्डेय ने 1920 ई० में जबलपुर की 'श्री' शारदा' पत्रिका में हिन्दी में छायावाद' शीर्षक चार निबंधों की एक लेख माला प्रकाशित करवाई थी। संभवत: 'छायावाद' नाम का यह पहला प्रयोग था। 'सरस्वती' में छायावाद का प्रथम उल्लेख जून, 1921 ई० के अंक में मिलता है।

छायावाद क्या है प्रश्न का उत्तर देते हुए मुकुटधर पाण्डेय ने लिखा है कि "अंग्रेजी या किसी पाश्चात्य साहित्य अथवा वंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले तो सुनते ही समझ जायेंगे कि यह शब्द 'मिस्टिसिज्म' के लिए आया है।"

'छायावाद' के लिए 'मिस्टिसिज्म' शब्द के आते ही 'रहस्यवाद' शब्द की बुनियाद पड़ गयी। सुकवि-किंकर छद्मनाम-धारी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'आजकल के हिन्दी कवि और कविता (सरस्वती 6 मई 1921) से पता चलता है कि जिन कविताओं को और लोग छायावाद कहते थे उन्हीं की वे 'रहस्यवाद' कहना चाहते थे लेकिन मुकुटधर पाण्डेय जहाँ उनमें 'आध्यात्मिकता' देखते थे वहां

आचार्य द्विवेदी के लिये वे अन्योक्ति पद्धति से अधिकृत थी छायावाद का प्रचलित अर्थ समझने की कोशिश करते हुए उसी निबंध में आचार्य द्विवेदी कहते हैं - छायावाद से लोगों का क्या मतलब है, कुछ समझ में नहीं आता शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो उसे छायावादी - कविता कहना चाहिए।"

इस तरह पंत के 'पल्लव' और प्रसाद के झरना आदि संग्रहों की कविताओं को 1927 तक अंग्रेजी में 'मिस्टिसिज्म' और हिन्दी में कभी छायावाद और कभी रहस्यवाद कहा जाता था। 1928 ई. में प्रकाशित आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य में रहस्यवाद शीर्षक पुस्तक से भी यही सिद्ध होता है। साथ ही शुक्ल जी के विवेचन से यह भी मालूम होता है कि तात्विक दृष्टि से उन रचनाओं को रहस्यवाद कहा जाता था और रूप - विधान की दृष्टि से छायावाद।

आगे चलकर जब महादेवी वर्मा की बहुत सी कविताएं प्रकाश में आ गयीं तो लोगों ने रहस्यवाद और 'मिस्टिसिज्म' शब्द को केवल इसी प्रकार की कविताओं के लिए सीमित कर दिया। धीरे - धीरे छायावाद से इसे अलगाकर 'रहस्यवाद' नाम की एक स्वतंत्र काव्य - धारा मान ली गई, जिसका विकास वेद - उपनिषद् से आरंभ होकर कबीर, मीरा आदि से होता हुआ हिन्दी में महादेवी वर्मा तक पहुंचता है। फलतः छायावाद केवल आधुनिक काव्य - प्रवृत्ति रह गयी और 'रहस्यवाद' का संबंध अज्ञात के प्रति आकर्षण वाली पुरानी कविताओं से जोड़ दिया गया।

सन 1930 के आसपास हिन्दी छायावादी कविताओं की आलोचना के सिलसिले में अंग्रेजी के रोमांटिक कवि वर्डसवर्थ, शेली, कीट्स आदि का नाम लिया जाने लगा और इस तरह छायावाद के साथ 'रोमैंटिसिज्म' नाम भी जुड़ गया। आचार्य शुक्ल ने रोमैंटिसिज्म' के लिए हिन्दी में 'स्वच्छंदतावाद' शब्द चलाया और वह चल भी पड़ी किन्तु उनके 'स्वच्छंदतावाद' की परिभाषा इतनी सीमित थी कि वह संपूर्ण छायावादी कविताओं को न घेर सकी, फलतः 'स्वच्छंदतावाद' अंग्रेजी के रोमैंटिसिज्म' का अनुवाद होते हुए भी छायावादी कविता का केवल एक अंग बन कर रह गया मगर धीरे-धीरे 'छायावाद' संपूर्ण रोमैंटिसिज्म का वाचक बन गया। आज कल हिन्दी में जब छायावाद कहा जाता है तो उसका मतलब उसी तरह की कविताओं से होता है जिन्हे यूरोपीय साहित्य में रोमैंटिसिज्म' की संज्ञा दी जाती है और जिसके अन्तर्गत रहस्यभावना तथा स्वच्छंदता-भाव के साथ-साथ और भी कई बातें मिलती हैं।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)